

संगीत कला अध्ययना

प्रथम वर्ष

मध्यमा - प्रथमवर्ष

पं. विष्णु दिग्म्बर पलुस्कर

१४७२

पं. विष्णु दिग्म्बर पलुस्कर का जन्म १८७२ ई. में श्रावणी गूर्जीमा के दिन कुरुन्दवाह (बेलगोव) में हुआ था। आपको गायनचार्य पं. बालकृष्ण बुवा से संगीत शिक्षा प्राप्त हुई। १८८८ ई. में आपने संगीत - प्रचार हेतु भ्रमण आरंभ किया। पलुस्कर जी ने अपने सुमधुर आकर्षण संगीत के द्वारा संगीत-प्रेमी जनता की आत्म विमोर कर दिया। पंडित जी के व्यक्तित्व के प्रभाव से सभ्य समाज में संगीत लालसा जाग उठी जिसके फलस्वरूप संगीत के कई विद्यालय स्थापित हुए जिसमें लाहौर का गांधर्व महाविद्यालय सर्वप्रथम १८८९ ई. को स्थापित हुआ बाद में बम्बई में गांधर्व महाविद्यालय स्थापित हुआ और यही मुख्य केन्द्र बन गया। पंडित जी का कार्य आगे बढ़ाने के लिए उनके शिष्यों ने सामूहिक प्रयत्न से गांधर्व महाविद्यालय मंडल की स्थापना हुई जिसके अन्तर्गत विभिन्न नगरों में अनेक केन्द्र स्थापित हुए। १९२० ई. में पलुस्कर जी कुछ विरक्त से रहने लगे थे, अतः १९२२ ई. में आपने नासिक में रामनाम आधार आश्रम खोला। तब से आपका संगीत जी रामनामय हो गया। इस प्रकार संगीत को पवित्र वातावरण में स्थापित करने संगीत का यह पुजारी २९ अगस्त १९३१ ई. को मिरज में प्रसु धाम को प्रस्थान कर गया। १९३१

पंडित जी द्वारा संगीत की कई पुस्तकें भी प्रकाशित हुई थीं जिनमें से कुछ के नाम इस प्रकार हैं-

- संगीत चालबोध
- स्वत्पालाप गायन
- संगीत तत्त्व दर्शक
- राग प्रवेश
- भजनामृतलहरी

आपकी स्वर लिपि पद्धति शातखड़ी-स्वरलिपि पद्धति से भिन्न है ग्रोफेसर डॉ. नी. पलुस्कर जी अपने सभ्य के गायकों में एक अच्छे गायक माने जाते थे, आपके ही सुप्रत्र हैं।

(2)

पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर

पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर का जन्म १८७२ ई. में श्रावणी पूर्णिमा के दिन कुरुनदवाड़ (बेलगांव) में हुआ था। आपको गायनचार्य पं. बालकृष्ण बुवा से संगीत शिक्षा प्राप्त हुई। १९०६ई. में आपने संगीत - प्रचार हेतु अभ्यास किया। पलुस्कर जी ने अपने सुप्रधार आकर्षण संगीत के द्वारा आरंभ किया। पलुस्कर जी ने अपने सुप्रधार आकर्षण संगीत के द्वारा प्रधाव से सम्बन्ध समाज में संगीत लालसा जाग उठ़ी जिसके फलस्वरूप संगीत के कई विद्यालय स्थापित हुए जिसमें लाहौर का गांधर्व महाविद्यालय सर्वप्रथम १९०९ मई १९०९ ई. को स्थापित हुआ बाद में बम्बई में गांधर्व महाविद्यालय स्थापित हुआ और यहाँ मुख्य केन्द्र बन गया। पंडित जी का कार्य आगे बढ़ाने के लिए उनके शिष्यों ने सामूहिक प्रयत्न से गांधर्व महाविद्यालय मंडल की स्थापना हुई जिसके अन्तर्गत विभिन्न नगरों में अनेक केन्द्र स्थापित हुए। १९२०१६२० में पलुस्कर जी कुछ वित्त से रहने लगे थे, अतः १९२२ ई. में आपने नासिक में रामनाम आधार आश्राम खोला। तब से आपका संगीत भी रामनाममय हो गया। इस प्रकार संगीत को पवित्र वातावरण में स्थापित करके संगीत का यह पुजारी २९ अगस्त १९३९ ई. को मिरज में प्रभु धाम को प्रस्थान कर गया।

31 1921

पंडित जी द्वारा संगीत की कई पुस्तकें भी प्रकाशित हुई थीं जिनमें से कुछ के नाम इस प्रकार हैं-

- संगीत बालबोध
- स्वल्पालाप गायन
- संगीत तत्व दर्शक
- राग प्रवेश
- भजनामृतलहरी

आपकी स्वर लिपि पद्धति भातखडे-स्वरलिपि पद्धति से भिन्न है प्रोफेसर डी.वी. पलुस्कर जो अपने समय के गायकों में एक अच्छे गायक माने जाते थे, आपके ही सुप्रत्र हैं।

✓ श्रुति और स्वर का विवेचन

नित्यं गीतोप्योगित्वमभिन्नेयत्वमप्युत् ।
लक्ष्मे प्रोक्तं सुपूर्वात्पं संगीतश्रतिलक्षणम् ॥

अर्थात् - वह आवाज, जो गीत में प्रयुक्त की जा सके और एक-दूसरे से अलग तथा स्पष्ट पहचानी जा सके, श्रुति कहलाती है। इसे अधिक स्पष्ट समझने के लिए मान लीजिए, हमने पहले एक नाद लिया जिसकी आंदोलन संख्या १०० कंपन प्रति सैकेंड है। फिर हमने दूसरा नाद लिया, जिसकी आंदोलन संख्या १०१ कंपन प्रति सैकेंड है। वैज्ञानिक दृष्टि से तो ये दो भिन्न नाद हैं, परन्तु इनकी कंपन संख्याओं में इतना कम अंतर है कि किसी कुशल संगीतज्ञ के कान भी इन दोनों नादों को पृथक्-पृथक् शायद ही पहचान सकेंगे। अब यदि हम दूसरे नाद में क्रमशः एक-एक कंपन प्रति सैकेंड बढ़ाते जाएँ, तो एक स्थिति ऐसी आ जाएगी कि ये दोनों नाद अलग-अलग स्पष्ट पहचाने जा सकेंगे या इन दोनों नादों को पृथक्-पृथक् स्पष्ट सुना जा सकेगा। इसी आधार पर विद्वानों ने श्रुति की परिभाषा यह दी है कि जो नाद एक दूसरे से पृथक् तथा स्पष्ट पहचाना जा सके, उसे श्रुति कहते हैं।

कुछ विद्वान् एक सप्तक में ऐसे पृथक्-पृथक् सुने जा सकनेवाले नादों की संख्या २२ मानते हैं। उदाहरण के लिए निम्नांकित श्लोक देखिए :-

तस्य द्वाविंशतिर्भेद श्रवणात् श्रुतियो मताः ।
हृदयाभ्यन्तरसंतुल्या नाड्यो द्वाविंशतिर्मताः ॥

अर्थात् - हृदय-स्थान में बाईस नाड़ियाँ हैं उनके सभी नाद स्पष्ट सुने जा सकते हैं, अतः उन्हें ही श्रुति कहते हैं। यही नाद के बाईस भेद माने गए हैं। हमारे संगीत-शास्त्रकार प्राचीन समय से बाईस नाद मानते चले आ रहे हैं। ये ना क्रमशः एक दूसरे रो ऊँचे चढ़ते चले गए हैं। इन्हीं बाईस नादों ही श्रुति कहते हैं। क्योंकि बाईस श्रुतियों पर गान करने में सर्वसाधारण को कठिनाई होगी। अतः इन बाईस श्रुतियों में से बारह स्वर चुनकर गान-कार्य होने लगता

स्वरों में श्रुतियों को बाँटने का नियम

प्राचीन ग्रंथकारों ने श्रुतियों को निम्नांकित क्रम से स्वरों में विभाजित किया है :-

चतुश्चतुश्चतुश्चैव छड्जमध्यमपंचमाः ।
द्वे द्वे निषादगंधारौ क्रिस्त्रीक्रष्णधैरती ॥

(३)

अर्थात् - षड्ज, मध्यम और पंचम स्वरों में चार-चार श्रुतियाँ, निषाद और गांधार में दो-दो श्रुतियाँ, तथा ऋषभ और धैवत में तीन-तीन श्रुतियाँ, हैं। इस प्रकार बाईस श्रुतियाँ सात स्वरों में बाँट दी गई हैं। नीचे दिया हुआ चित्र इसे अधिक स्पष्ट कर देगा :-

बाईस श्रुतियों पर अध्यनिक पद्धति के बारह स्वरों की स्थापना। ✓

सं०	श्रुति - के नाम	स्वर के नाम	स्वर संबोधन
१ १	तीव्रा	स (अचल)	२४५
२ २	कुमञ्जुती		
३ ३	मंदा	रे (क्लोमल)	२६८ ३/१७
४ ४	छलोदती		
५ ५	द्यावती	रे (तीव्र)	२७०
६ ६	रंजनी		
७ ७	रतिका	म (क्लोमल)	२८८
८ ८	रौद्री	म (तीव्र)	३०९ १९/४३
९ ९	क्रोषा		
१० १०	वज्ञिका	म (क्लोमल)	३२०
११ ११	प्रसारिणी	म (तीव्र)	३३८ १४/५०
१२ १२	प्रीत		
१३ १३	मार्जनी		
१४ १४	क्षिती	प (अचल)	३६०
१५ १५	रक्षा	ष (क्लोमल)	३६९ ३/१५
१६ १६	संदीपनी		
१७ १७	आलापिनी		
१८ १८	मदंती	ष (तीव्र)	४०५
१९ १९	रोहिणी		
२० २०	ख्या	नि (क्लोमल)	४३२
२१ २१	उग्रा	नि (तीव्र)	४५२ ४/४३
२२ २२	क्षेभिणी		
१	तीव्रा	साँ (वार)	४५०

५

✓ आलाप

(गायक जब अपना गाना व्यरच करता है, तो राग के अनुसार उसके स्वरों को विसंवित लय में फैलाकर वह दिखाता है कि कौन सा राग या रहा हुँ। आलाप को ही स्वर-विस्तार भी कहते हैं; जैसे - बिलावल का स्वर-विस्तार इस प्रकार शुरू करेंगे - ग ड, रे ड, सा ३ सा, रे सा ३ ग ३ म ग प ३ म ग, म रे, सा ३ ३ ३ इत्यादि।)

बढ़त

जब कोई गमक, गाना गाते समय एक स्वर या दो-दो स्वरों को लेते हुए या छोटे-छोटे स्वर-समुदायों से बढ़ते हुए बड़े बड़े स्वर-समुदायों पर आकार लय को धीरे-धीरे बढ़ाता है और फिर बोल-तान गमक इत्यादि का प्रयोग करता है, तब उसे बढ़त कहते हैं।

गमक

आंदोलन के द्वारा जब स्वरों में कंपन पैदा होते हैं, तो उसे ही गमीरता-फूर्झक उच्चारण करने को गमक कहते हैं; जैसे - स अ अ अ रे ए ए ए ग अ अ अ अ इत्यादि।

✓ मीड़

(किसी एक स्वर से आगे या पीछे के दो, तीन या अधिक स्वरों पर ध्वनि को बिना खंडित किए गाने या इच्छाने को मीड़ कहते जैसे प ध नि सा यहाँ पर पंचम से लेकर तार-षड्ज तक की मीड़ दिखाई गई है) तो इस गाने में प से सां तक कोभलता से इस प्रकार जाना चाहिए कि बीच के दोनों स्वर ध नी बोल भी जाए और आवाज टूटने भी न पाए।)

✓ सूत

सूत और मीड़ में केवल इतना ही अंतर है कि मीड़ का प्रयोग गाने में या सितार इत्यादि शिष्ठागानाद्वय साजों में होता है और सूत का प्रयोग गज से बजने वाले साजों जैसे सारंगी, दिल्ली, कांच्चिन इत्यादि में होता है। तरीका वही है, जो मीड़ का है।

(5)

✓ ○ आंदोलन ✓

स्वरों के हिलने या कंपन को आंदोलन कहते हैं। स्वरों के हिलने या उनके कंपन से ही आंदोलन संभ्या नापी जाती है।

✓ ○ कण ✓

किसी स्वर का उच्चारण करते समय उसके आगे या पीछे के किसी स्वर को थोड़ा मुने या स्पर्श करने को कण कहते जैसे साँ। यहाँ पर निषाद का जरा-सा स्पर्श करके सा पर आना है, तो इसे सा पर निषाद का कण कहेंगे।

✓ ○ तान ✓

स्वरों का वह समूह, जिसके द्वारा राग-विस्तार किया जाता है, तान कहलाता है; जैसे - सा रे ग म, ग रे सा, अथवा साँ नी ध प म ग रे सा इत्यादि। स्वरों की तानने या फैलाने से ही तान शब्द की उत्पत्ति हुई है। तानों के मुख्य तीन प्रकार होते हैं, जैसे -

1. शुद्ध तान - जिस तान में स्वरों का क्रम एकसा हो और आरोह-अवरोह सीधा-सीधा हो उसे शुद्ध तान कहते हैं। जैसे सा रे प म प ध नि साँ साँ नि ध प म ग रे सा। इसे ही सपाट तान भी कहते हैं।
2. कूट तान - जिस तान में स्वरों का क्रम या सिलसिला स्पष्ट प्रतीत न हो, उसे कूट तान कहेंगे यह हमेशा टेढ़ी-टेढ़ी चलती है; जैसे - सारे गरे ध्य गप रेग मप धसाँ धप इत्यादि।
3. मिश्र तान - शुद्ध तान और कूट तान इन दोनों का जिसमें मिलाय या मिश्रण हो, उसे मिश्र तान कहेंगे; जैसे - प ध नि साँ ग म प म ध प म प ग म रे सा। इसमें कूट तान और शुद्ध तान दोनों मिली हुई हैं।

✓ ○ ठेका

किसी भी ताल के एक आवर्तन के बोलों के समूह को जब ताल-वाद्य पर बजाए जाते हैं, उसे ठेका कहते हैं।

मात्राएँ :	ध ा गे न ति	न क धि न
ताल-चिन्ह :	X	१

० दुगुन लय

ठाह के लय में जिस प्रकार एक मात्रा में एक बोल बोलते हैं या बजाते हैं, अर्थात् ठाह की दुगुनी तेज लय को दुगुन कहते हैं, और इस लय की एक मात्रा में दो बोल बोलते हैं या बजाते हैं। जैसे - धार्धिं धिंधा धार्धिं धिंधा

१ २ ३ ४
| 2 3 4

० चौगुन लय

ठाह के लय में जिस प्रकार एक मात्रा में एक बोल बोलते हैं या बजाते हैं, अर्थात् ठाह की चौगुन तेज लय को चौगुन कहते हैं, और इस लय की एक मात्रा में चार बोल बोलते हैं या बजाते हैं। जैसे - धार्धिंधिंधा धार्धिंधिंधा

१ २

० सरगम

राष्ट्रबद्ध व तालबद्ध स्वर-रचना विशेष को सरगम-गीत कहते हैं। इसमें किसी प्रकार की कविता नहीं; होती केवल स्वर ही होते हैं। सरगम-गीत भिन्न-भिन्न रागों व तालों में निरूप होते हैं। इनको गाने से विद्यार्थियों को स्वर का ज्ञान तथा राग का ज्ञान में बहुत सहायता मिलती है।

० लक्षण गीत

कोई गीत जब किसी राग में आया रखा हो, और उस गीत के शब्दों में उस राग के वादी-संवादी या वर्जित स्वरों का वर्णन किया गया हो, तो उसे लक्षण-गीत कहते हैं। लक्षण-गीत से राग संबंधी अनेक बातें सरलतापूर्वक याद हो जाती हैं।

५ ध्रुवपद

कहा जाता है कि ध्रुवपद-गायन का आविष्कार सबसे पहले पंद्रहवीं शताब्दी में ग्वालियर के राजा मानामिंह तोमर द्वारा हुआ था उन्होंने स्वयं भी कुछ ध्रुवपदों की रचना की थी। प्राचीन काल में ध्रुवपद में संस्कृत-श्लोकों को गाकर हमारे ऋषि मुनि भगवान की आराधना करते थे।

वर्तमान समय में भी ध्रुवपद एक गंधीर और जोरदार गाना माना जाता है। ध्रुवपद के गीत प्रायः हिन्दी, उर्दू एवं ब्रजभाषा में मिलते हैं। यह मर्दनी आवाज का गायन है। इसमें वीर, शृंगार और शांत रस प्रधान हैं।

ख्याल

(7)

फारसी भाषा में ख्याल का अर्थ है विचार या कल्पना। राग के नियमों का पालन करते हुए अपनी इच्छा या कल्पना से विविध आलाप-तालों का विस्तार करते हुए एकताल, निताल, छूतरा, आड़ा चौताल इत्यादि तालों में गाते हैं। ख्यालों के गीतों में शृंगार रस का प्रयोग अधिक पाया जाता है। ख्याल गायकी में जलद तानए गिटकरी इत्यादि का प्रयोग शोभा देता है और स्वर-वैचित्रय तथा चमकार पैदा करने के लिए ख्यालों में तरह-तरह की तानें ली जाती हैं। ख्याल गायन में ध्रुवपद जैसी गंभीरता और भक्ति रस की शुद्धता नहीं पाई जाती।

ख्याल दो प्रकार के होते हैं :- १. जो बिलंबित लय में गाए जाते हैं, उन्हें बड़े ख्याल कहते हैं और २. जो छुत लय में गाए जाते हैं, उन्हें छोटे ख्याल कहते हैं। गायक जब ख्याल गाना आरम्भ करता है, तो पहले बिलंबित लय में बड़ा ख्याल गाता है, जिसे प्रायः बिलंबित एकतालए तीनताल, छूतरा, आड़ा छुत लय में आरम्भ कर देता है, जिसे प्रायः निताल, अथवा छुत एकताल में गाया जाता है। छोटे-बड़े ख्याल जब गायक एक स्थान पर एक समय गाता है, तो ये दोनों ही प्रायः किसी एक ही राग में होते हैं, किंतु बोल या कविता, दोनों ख्यालों की अलग-अलग होती हैं।

धामार

० जब होरी नाम के गीत को धामार ताल में गाते हैं तो उसे धामार कहते हैं धामार गायन में प्रायः ब्रज की होरी का वर्णन रहता है। धामार में दुगुन, चौगुन, बोलतान, गमक इत्यादि का प्रयोग होता है, अतः कठिन गायकी है।

तराना

यह भी ख्याल के प्रकार की एक गायकी है। इसमें गीत के बोल ऐसे होते हैं, जिसका कोई अर्थ नहीं होता; जैसे - ता ना वा रे, तदारे, ओदनी, दीम, तनोम इत्यादि। तराने में भी स्थाई और अंतरा, ये दो भाग होते हैं। तानों का प्रयोग भी इसमें होता है। तराने की लय छुत होती है, लय का महत्व इस गायन में अधिक होता है। तराने की लय धीरे-धीरे बढ़ती जाती है।

(नकारं प्राग्नामानं दकारमनलं विदुः ।

जातोप्राग्निसंयोगात्तेजा नादोऽभिधीयते ॥

अर्थात् - नकार प्राण-वाचक (वायु-वाचक) तथा दकार अग्नि-वाचक है, अतः जो वायु और अग्नि के योग (सम्बन्ध) से उत्पन्न होता है, उसी को नाद कहते हैं।)

संगीत एव नाद-

आहूतोऽनाहूतश्वेति द्विघा नादो निगद्यते ।

सोऽयं प्रकाशते पिंडे तस्मातपिंडोऽभिधीयते ॥

अर्थात् - नाद के दो प्रकार माने जाते हैं, आहूत तथा अनाहूत। ये दोनों पिंड (देह) में प्रकट होते हैं। इसलिए पिंड का वर्णन किया जाता है।

अनाहूत नाद - जो नाद क्षेवल अनुच्छव से जाना जाता है और जिसके उत्पन्न होने का कोई खास कारण न हो यानी जो बिना संघर्ष के स्वयंभू रूप से उत्पन्न होता है, उसे अनाहूत नाद कहते हैं।

आहूत नाद - जो कानों से सुनाई देता है और जो दो वस्तुओं के संघर्ष या रगड़ से पैदा होता है, उसे आहूत नाद कहते हैं। इस नाद का संगीत से विशेष सम्बन्ध है।

नाद के सम्बन्ध में तीन बातें ध्यान रखनी चाहिए।

१. नाद का ऊँचा-निचापन
२. नाद का छोटा-बड़ापन
३. नाद की जाती या गुण)

वाद्य परिचय तानपूरा

गायकों के लिए तानपूरा (तबूरा) एक अच्छा बहुत्वपूर्ण तंतवाद्य यंत्र है। जिसके प्रयोग शास्त्रीय संगीत के हर विधा में किया जाता है। तानपूरे में चार तार होते हैं।

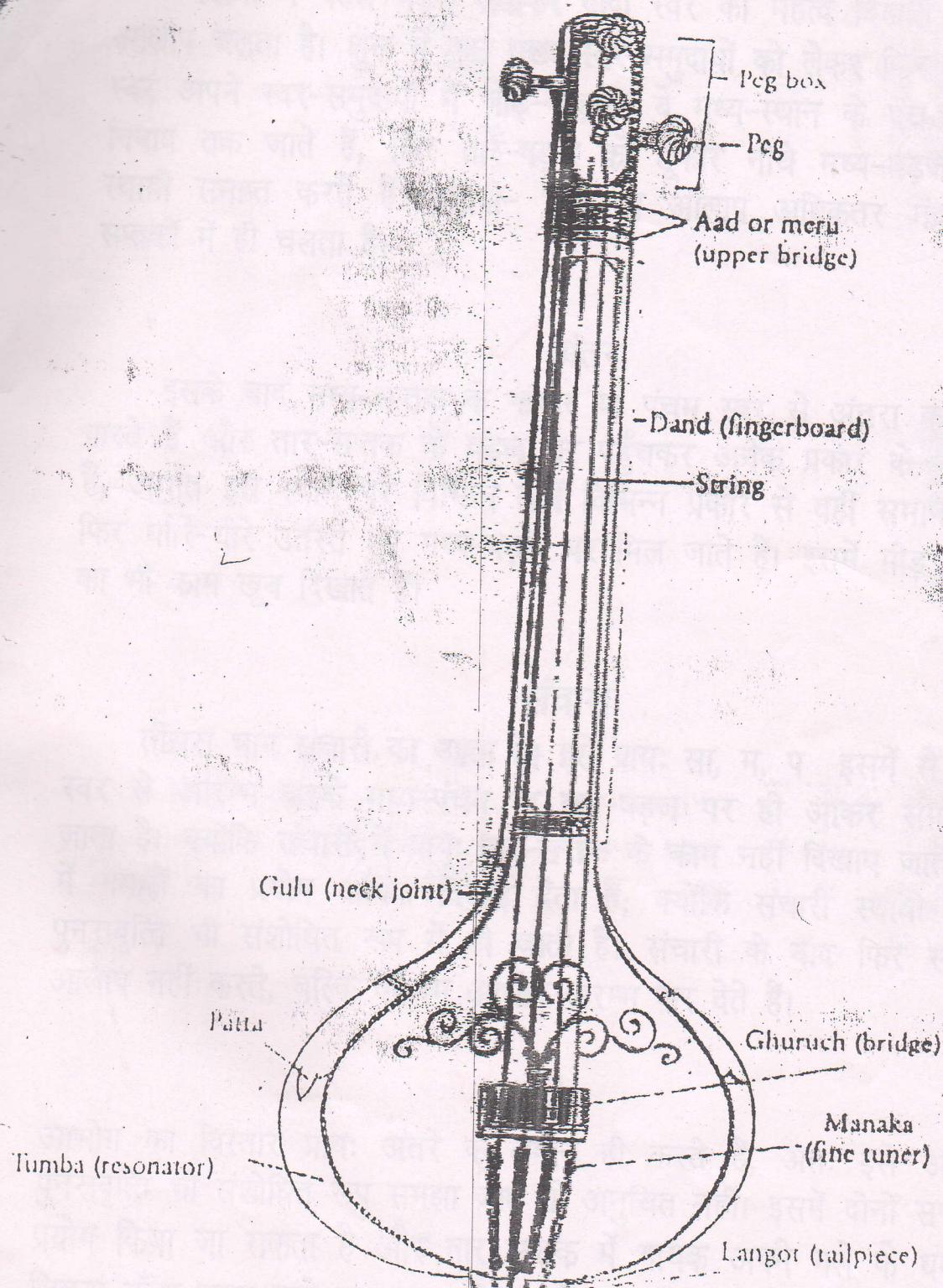
तानपूरे के अंग

1. **तुंवा** :- यह लौकी का बना हुआ नीचे गोल और ऊपर कुछ घपटा आकृति का होता है। इसके ऊपर पोल होता है। जिसके कारण स्वर गौजते हैं।
2. **तारती** :- गोल लौकी के ऊपर का भाग काटकर अलग कर दिया जाता है और खोखले भाग को लकड़ी के एक ढुकड़े से ढंक दिया जाता है जिसे तबली कहते हैं।
3. **ब्रिज** :- घुड़ध अथवा घोड़ी भी कहते हैं यह तबली के ऊपर स्थित लकड़ी अथवा हड्डी की बनी हुई छोटी छोटी के आकार की होती है। तथा तानपूरे के चारों तार स्थिर रहते हैं।
4. **डॉड** :- तूंवे में जुड़ी लकड़ी की पोली ढड़ी को डॉड कहते हैं। इसमें खूंटियाँ बनी रहती हैं, तथा तार इसके ऊपर खिंचे रहते हैं।
5. **लंगांट** :- तूंवे के नीचे के भाग में तार को बांधने के लिए एक कील होती है जिसे कील या लंगांट कहते हैं। इससे तानपूरे के चारों द्वारा बारंब होकर खूंटियों तक जाते हैं।
6. **अटी** :- खूंटियों की और ढैंड पर हड्डी की दो पटटियाँ लगी होती हैं, जिसमें से एक के ऊपर होकर तार जाते हैं। वही अटी कहलाती है।
7. **तारगहन** :- दूसरी पटटी में अटी के बाहर होती है चार सूराख होते हैं, जिसमें होकर चारों तार खूंटियों तक जाते हैं। उसे तारगहन कहते हैं।
8. **गुलू** :- जिस स्थान पर तूंवा और डॉड जुड़े रहते हैं उसे गुल या गुलू कहा जाता है।
9. **खूंटियाँ** :- अटी व तारगहन के आगे लकड़ी की चार खूंटियाँ लगी होती हैं, जिससे तानपूरे के चारों तार बंधे रहते इन्हें खूंटियाँ कहते हैं।
10. **मनका** :- ब्रिज और लंगांट के बीच में तार जिन मोतियों में पिरोए जाते हैं, उन्हें मनका कहते हैं। स्वरों के सूक्ष्म अन्तर को ठीक करने के लिए मनका थोड़ा ऊपर नीचे किया जाता है।
11. **सूत** :- ब्रिज और तारों के बीच में धागे का बुकड़ा दबाया जाता है, इसे उचित स्थान पर लगाने से तानपूरे की झंकार खुली हुई और सुंदर लगती है।

तार मिलाना :- तानपूरे में चार तार होते हैं। इनमें से पहला तार गर्ध सप्तक के पंचम (प) में, बीच के दोनों तार (जोड़ी के तार) मध्य सप्तक के षष्ठ्य (स्त्रा) में और चौथा तार मंद्र सप्तक के षड्ज (स्त्रा) में मिलाया जाता है। इस प्रकार तानपूरे के चारों द्वारा य सा सा सा इन स्वरों में मिलाए जाते हैं। जिन रागों में पंचम वर्जित होता है (जैसे ललित) उसमें चंचम वाला तार मध्यम में मिलता है। मारवा व पूरिया जैसे रागों में नि सा सा सा में मिलते हैं।

तानपूरे के नि सा सा गे तीनों तार पवकों लौहे (स्टील) के होते हैं, और चौथा तार (स्त्रा) पीतल का होता है। किसी किसी तानपूरे में पटला तार भी दीर्घन का होता है।

Tanpura



स्थायी

स्थायी में पहले षड्ज लगाकर बादी स्वर का महत्व दिखाते हुए पूर्वांग में आलाप चलता है। शुरू में कुछ मध्य स्वर-समुदायों को लेकर फिर एक-एक नया स्वर अपने स्वर-समुदायों में जोड़-जोड़कर वे मध्य-स्थान के पंचम, छैवतं और निषाद तक जाते हैं, फिर तार-षड्ज को छूकार नीचे मध्य-षड्ज पर आकर स्थायी समाप्त करते हैं। स्थायी- भाग का आलाप अधिकतर गंद्र और मध्य सप्तकों में ही चलता है।

अंतरा

इसके बाद मध्य-सप्तक के नांवार या पंचम स्वर से अंतरा का भाग शुरू करते हैं और तार-सप्तक के षड्ज पर पहुँचकर अनेक प्रकार के काम दिखाते हैं, अर्थात् इस स्थान पर विभिन्न तर्णै विभिन्न प्रकार से वहीं समाप्त करते हैं, फिर धीरे-धीरे उतरते हुए मध्य-षड्ज पर मिल जाते हैं। इसमें मीड़ और कंपन का भी काम खूब दिखाते हैं।

संचारी

तीसरा भाग संचारी का आता है। इसे प्रायः सा, म, प इसमें से किसी भी स्वर से आरंभ करके मध्य-पंचम का तार-षड्ज पर ही आकर समाप्त किया जाता है। क्योंकि संचारी में प्रायः तार-सप्तक के काम नहीं दिखाए जाते। संचारी में गमकों का प्रयोग अधिक दिखाई देता है; क्योंकि संचारी स्थायी भाग की पुनरावृत्ति भी संशोधित रूप में हो जाती है। संचारी के बाद फिर स्थायी का आलाप नहीं करते, बल्कि एकदम आभोग अरम्भ कर देते हैं।

आभोग

आभोग का विस्तार प्रायः अंतरे के समान ही करते हैं, अतः इसे अंतरे की पुनरावृत्ति भी संशोधित रूप समझा जाए तो अनुचित नहीं। इसमें दोनों सप्तक का प्रयोग किया जा सकता है और तार सप्तक में नायक अपने गले के धर्मानुसार जितना ऊँचा जाना चाहे जा सकता है। इसमें लय अति द्रुत ही जाती है।